शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व्यंग्य का स्वरूप एवं हरिशंकर परसाई

डॉ. अनुपमा छाजेड़
प्राचार्या
श्री उमिया कन्या महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जीवन में जब कथनी और करनी में विरोधाभास उत्पन्न होता है, तब वहां वाणी और भाषा अपनी स्वाभाविक वृत्ति को त्याग कर वक्र हो जाती है। यही वक्रता साहित्य में व्यंग्य के रूप में प्रतिष्ठित हुई श्रेष्ठ समाज सुधारक संत कबीर दास से शुरू हुई यह परम्परा आधुनिक काल तक चली आयी है व्यक्ति की सुषुप्त चेतना को जाग्रत करने के लिए इसका उपयोग कारगर तरीके से संत और साहित्यकारों ने किया है। स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य लेखन में हरिशंकर परसाई का योगदान अतुलनीय है। प्रस्तुत शोध पत्र में व्यंग्य के स्वरूप और हरिशंकर परसाई के लेखन पर विचार किया गया है।

व्यंग्य का स्वरूप

व्यंग्य शब्द का यदि शाब्दिक विश्लेषण करें तो वि +अंग = व्यंग्य होता है। 'वि' उपसर्ग में अंग 'धातु - व्यत' प्रत्यय लगाकर बनाया गया शब्द है और अर्थ में व्यंजना शक्ति से भी ले सकते है, क्योंकि शब्द शक्ति तीन प्रकार की होती है। अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति इन सबमें सर्वाधिक प्रभावकारी शब्द शक्ति व्यंजना है। इसमें शब्द से युक्त वाक्यों का प्रचलित अर्थ नहीं लिया जाता है अर्थात् कहा जाता है और आँख में हम अंजन लगाते है। इसलिए की दृष्टि दोष दूर हो जाये और नेत्रों में साफ दिखने लगे। इसी प्रकार व्यंजना शब्द शक्ति के मुख्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ को पीछे छोडती हुई मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ को द्योतित कराती है। व्यंग्य का कार्य भी यही है। व्यंग्यार्थ शब्दों से व्यक्ति आदित होता है, प्रभावित होता है और मूल अर्थ में क्रियात्मक पुष्टि होती है। इस संदर्भ में डॉ बापूराव देसाई का कथन महत्वपूर्ण है - "व्यंग कभी तो कमियों, दोषों पर कठोर आघात है और व्यंग शब्द का ही अधिक प्रचलन है। जो उचित प्रतीत होता है। वास्तव में व्यंग स्थिति विशेष है और उसे लक्षित कर कहा गया वक्र कथन व्यंग्य है।"[1]

इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यंग्य और व्यंग दोनों एक ही नही है। व्यंग का अर्थ शरीर के किसी अस्तित्व से है। लेकिन व्यंग्य का वास्तविक अर्थ कार्य शक्ति की अधिकता से है और यही सत्य भी है कि परसाई जी ने व्यंग्य शब्द का ही प्रयोग किया है।

व्यंग्यात्मक वाक्यों के प्रयोग से श्रोता पर अधिक प्रभाव पडता है और वह सोचने के लिए मजबूर भी हो जाता है। इसलिए व्यंग्य विषमता को उद्घटित कर चेतना में हलचल पैदा कर देता है। इसलिए यह एक प्रभावशाली अस्त्र है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि, "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अधरोष्ठ में हंस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो।"[2]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व्यंग्यकार समसामयिक परिस्थतियों के लिए जिम्मेदार शक्तियों को कड़ी चुनौती देता है और शब्द बाणों से बेध कर अपने मन को हल्का करने का प्रयत्न करता है। व्यंग्य का लक्ष्य चेतना को उद्वेलित और पुनर्गठित करना होता है। हास्य और व्यंग्य दो अलग-अलग शब्द है, लेकिन हास्य व्यंग्य मिलकर एक विशेष प्रकार का प्रभाव डालते है। कभी-कभी लोग हंसी-हंसी में बहुत सी गहरी बातों को कह देते हैं, जिसका प्रभाव अवश्य पडता है। व्यंग्य में सामाजिक ... हास्य विनोद मनोरंजन से अलग कर सामाजिक यथार्थ से जोड़ दिया जाता है। इसलिए डॉ. मलय के अनुसार, ''व्यंग्य शुद्ध हास्य से प्रारम्भ होने वाली हास्य यात्रा का अंतिम छोर होता है, जिसमें अनुभव शीलता का पर्याप्त हास्य रहता है। इसमें मानसिक सूक्ष्मता के साथ-साथ अपने आसन्नगत आसंगी तत्वों की प्रति स्थापना करती है।''[3] व्यंग्य का जन्म यथार्थवाद के विरूद्ध होता है। व्यंग्य की रचना जीवन के सही मूल्यों व अर्थ की पहचान कराने व उसे महत्व दिलाने के लिए होती है।

हरिशंकर परसाई और व्यंग्य

स्वतंत्रता के पूर्व व्यंग्य एक शैली के रूप में था तथा एक छोटे से पौधे के रूप में पल्लवित हो रही था, लेकिन आजादी के पश्चात् हरिशंकर परसाई जी ने इसे सींच-सींच कर वृक्ष का रूप दे दिया। परसाई जी की रचनाओं में जीवन को सचेत रूप से देखने और जीने के लिए व्यंग्य को प्रधानता दी गई है। परसाई जी चाहते थे कि लोग अपने दैनिक अनुभव व संवेदनाओं के प्रति जागरूक रहें उन पर विचार करें और उनका विश्लेषण करके जीवन की कला को कला मानकर जीवन व्यतीत करना सीखें। परसाई जी का प्रश्न है, उनकी रचना में व्यंग्य एक अंश के रूप में बन गया और हिन्दी साहित्य में एक धारा-सी चल पड़ी उनकी संपूर्ण रचना कही कथन भंगिमा तो कही रचना के मूल स्वर व्यंग्य में निहित है। परसाई जी व्यंग्य विधा में स्वतंत्र रूप से उतरे, जिसके दो कारण है। पहला कारण भारत वर्ष आजाद हो चुका था। अपनी बात स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की आजादी थी। दूसरा यह कि जीवन की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों ने कठिनाई ने, आपदाओं ने उनके जीवन को झकझोर कर रख दिया।

परसाई जी ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की शक्ति थी। इसलिए उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली का सहारा लिया। उसी का परिणाम है कि आज हमें व्यंग्य. साहित्य में हर जगह दिखाई देता है। परसाई जी ने अपने आत्मपरक विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक व्यंग्यात्मक निबंधों में सूपर्ण परिस्थितियों के भीतर कार्यशील वर्ग समाजी पूंजीवाद की पहचान कर ली थी। इसलिए उन्होंने वर्ग, चरित्र और विशिष्टताओं को एक साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशील शक्तियों और व्यक्तियों को भी बेनकाब कर दिया।

वे यथार्थवादी रचनाकार हैं, वे उस यथार्थ की निर्धारक राजनैतिक शक्तियों के वर्ग, चरित्र और सत्ता स्वार्थ पर सीधे आक्रमण करते हैं और अपने पाठकों को वर्ग समाजी राजनीति के जनविरोधी चातक भूमिका से अवगत कराते है।

''भारत के किसी जामुन के पेड़ के नीचे तीन आदमी मुंह खोले लेटे थे और कह रहे थे कि आ जामुन मेरे मुंह में गिर। जामुन गिरने ही वाली थी कि वहां एक घुड़सवार आया। वह घोड़े पर बैठकर घूमने को बड़ा काम मानता था, जैसे आजकल सरकारी जीप पर बैठने को काम माना

जाता है। उसने तीनों को हंटर मार कर भगा दिया।''[4]

उपर्युक्त कथन में जामुन के फल की गिरने की इच्छा रखना, बीच में ही घुड़सवार का आना और हंटर मारकर भगा देना, एक व्यंग्यार्थक भाव की ओर संकेत करता है।

''राम की लुगाई और गरीब की लुगाई'' प्रसंग में परसाई ने व्यंग्य किया है।

''कबीर अपने को राम की लुगाई कहते थे, हम गरीब की लुगाई है। वह राम की लुगाई सबको छेड़ती रही उसे छेड़ने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। बड़े की लुगाई का यही रूतबा होता है।''[5]

लुगाई प्रतीक लेकर परसाई जी ने आधुनिक समाज पर तीखा व्यंग्य किया है। कहीं-कहीं तो परसाई के व्यंग्य को समझने में मस्तिष्क पर अधिक जोर देना पड़ता है और कहीं-कहीं व्यवहारिक तथ्यों के आधार पर सीधा प्रहार होता है, जिसका संबंध दैनिक जीवन से होता है।

नैतिकता एवं स्त्री के विषय में परसाई जी ने मुरब्बे के डिब्बे का प्रयोग किया है।

''नैतिकता ने यह सीखाया है कि स्त्री डिब्बे बंद करके रखने की चीज है। हमारा समाज मुरब्बे के डिब्बे का बड़ा शौकीन है।''[6]

परसाई जी का राजनैतिक व्यंग्य उलटबासियों के रूप में व्यक्त हुआ है। बकरी का पौधा चरना एक सामान्य बात है पर इस सामान्य बात को परसाई ने एक विशेष रूप में लिया है - ''सचिवालय के अहाते में जो वटवृक्ष पं जवाहरलाल नेहरू ने रोपा था उसे बकरी चर गई कहते है। पौधे के आस-पास जो चबूतरा था वह भी पौधे को बचा नहीं पाया।''[7]

यहां पर पौधे से तात्पर्य पंचवर्षीय योजना से है, जिसे पौधे के रूप में पं. जवाहरलाल नेहरू ने संचालन किया है। बकरी भ्रष्टाचार का प्रतीक है। भ्रष्टाचार ने सब समाप्त कर दिया। चबूतरा चैकीदार है, उसने बकरी को चरने में सहयोग किया क्योंकि उसको भी हिस्सा मिला था।

परसाई जी का व्यंग्य यथार्थ पूर्ण नहीं है बल्कि सरल रूप में यथार्थ से संयुक्त है। साथ ही साथ उसमें सामाजिकता भी है और व्यवहारिकता भी है। जब महात्मा गांधी के ब्रह्मचर्य के विषय में प्रश्न आया तो परसाई जी का उत्तर था ''गांधी जी ने चार बेटों के बाप होने के बाद लगभग .... के दोपहर में ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था। उन्होंने पांच व्रत लिये थे - सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य।''[8]

राजनीति में जनतंत्र एक प्रमुख विषय होता है। जनतंत्र या प्रजातंत्र की दुर्दशा का परसाई जी ने नजदीक से अनुभव किया है, इसलिए इस विषय पर अपनी व्यंग्यात्मक शैली में साहित्य सृजन करके लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। प्रतीक विधान के अंतर्गत जनतंत्र को सब्जी तक की संज्ञा दे डाली -

''लोग कई सालों से जनतंत्र की सब्जी खा रहे है, कहते है कि बड़ी स्वादिष्ट होती है।''[9]

आधुनिक युग में मंत्री द्वारा उद्घाटन की प्रथा है। कभी सफाई कार्य का उद्घाटन है तो कभी किसी कार्य का। इस विषय में भी परसाई जी की कलम नहीं रूकती है।

हर अच्छी चीज बेरंग हो जाती है। पिछले साल सफाई कार्य का उद्घाटन मेरे घर के पास ही हुआ था। अच्छी साइट थी। वहां कचरे का एक बड़ा ढेर लगाया गया। फोटोग्राफर ढेर और प्रकाशदेख गया और तय कर गया कि मंत्री जी को किस जगह खड़े होकर फावड़ा चलाना है। अफसर कचरने की सजावट करने में लग गये। एक दिन मंत्री जी आये और दो-चार फावड़े चलाकर सफाई कार्य का उद्घाटन कर गये।

इसके बाद कोई उस कचरने को साफ करने नहीं आया।''[10]

राजनीति में चुनाव प्रणाली का एक विशेष महत्व होता है। परसाई जी की रचनाओं में यह विषय भी अछूता नहीं है। उन्होंने चुनाव की राजनीति महत्वाकांक्षा से युक्त में मेनका की संज्ञा दे डाली और चुनाव में प्रत्याशी को ऋषि विश्वामित्र की संज्ञा दी है।

''राजनीति महत्वाकांक्षा जरूर मेनका है। पहले विश्वामित्र जो तपस्वी को मोह में फसाती थी। अब मुझ जैसे मामलूी लेखक पर अपना रूप और कौशल खर्च करती है।''[11]

चुनाव के समय नेताओं की नींद टूटती है और जनता के बीच जाते हैं, जिसकी चुटकी परसाई जी ने इस प्रकार ली है -

''मेंढक भी पानी गिरते ही प्रकट हो जाते है।''[12]

प्रेम प्रसंग आधुनिक युग में बहुत प्रसंगित है। इस विषय में परसाई जी का कथन है-

''मेरा विचार है कि प्रेम प्रसंग के कई महत्वपूर्ण पक्ष लेखकों और विचारकों की दृष्टि में नहीं आये। कई मुद्दे तो ऐसे है कि उन पर चर्चा नहीं, शोध होनी चाहिए।''[13]

परसाई जी ने असफल कवि सम्मेलन में अध्यक्ष की सफलता को व्यंग्यात्मक रूप में व्यक्त किया है। ''मैने कहा दोस्तो ! मैं जबलपुर का रहने वाला हूं और यह जो मामला आप कर रहे है उसमें हमारे शहर के लोग उस्ताद माने जाते है। हमारे शहर के लड़के भी बड़े जोरदार है पर आप उनसे भी ऊंचे निकल गए। हमारे लड़के जवान लड़कियों को छेड़ते है पर आप तो अम्मा को भी छेड़ लेते है।''[14]

उपर्युक्त वर्णन एक कवि सम्मेलन का है, जब एक वृद्धा कवयित्री के काव्य पाठ पर नौजवान श्रोताओं ने ही हल्ला मचा दिया।

परसाई जी की व्यंग्य विषय धरती के मानव तक ही संभव नहीं है, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर स्वर्ग के देवी-देवताओं को भी अपने विषय का पात्र बना देते है। ''भोलाराम राम का जीव'' भी एक रोचक व्यंग्य वर्णन है। इस वर्णन में आधुनिक युग के भ्रष्टाचार का विश्लेषण है।

''भोलाराम का जीव'' रचना भी इसी प्रसंग का है। शासकीय विभाग के भ्रष्टाचार के चित्रण के लिए धर्मराज यगदूत तथा नारद को भी पेश कर दिया। भोलाराम एक सरकारी कर्मचारी था और जिला जबलपुर का निवासी भी था। मराणोपरान्त वह धर्मराज के दरबार में नहीं पहुंचा। उसकी आत्मा पेंशन की फाईलों में छिपा गई थी। यमदूत भी उसे खोज्ता रहा, जब यगदूत भोलाराम के जीव को नहीं पाया तो यमराज से बताया उसी समय नारद जी भी आ गए। तरफ समस्या ढूंढने पर धर्मराज ने कहा नरक में पिछले सालों में बड़े गुनी कारीगर आ गए है। कई इमारतों के ठेकेदार जिन्होंने ठेकेदार से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं, इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी है। वह समस्या तो हल हो गई पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पांच दिन पहले मृत्यु हुई। उसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला पर वह कही नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा तो पाप पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।''[15]

यहां पर परसाई जी ने वर्तमान समय में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्र खींचा है। ''उन पर वजन रखिए'' यह वाक्य बहुत व्यापक अर्थ रखने वाला है। जो आधुनिक युग के भ्रष्टाचार प्रसंग में काफी प्रचलित है। परसाई जी कबीरदास जी पर भी अपनी रचना में व्यंग्य किया -

''सांई इतना दीजिये, जाके कुटुम समाय।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाए ।।"[16]
इस दोहे को परसाई जी ने अलग ही अर्थ प्रस्तुत किया है।

"कितनी चालाकी भरा दोहा है यह। पहले तो उन्होंने कुटुम्ब का इंतजाम कर लिया, फिर अपना.... अपने परिवार के बाद उन्हें साधु की याद आई। तुम कहते हो वो भूखा रह कर दूसरों को भोजन खिलाते थे।" इस प्रकार परसाई जी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में 'कबीर' को भी नहीं छोड़ा है।

निष्कर्ष

परसाई जी संवेदना का आधार साधारण से आत्मीय लगाव है। विषय चाहते राजनैतिक हो या सामाजिक या धार्मिक। सबमें परसाई जी के व्यंग्य की झलक, साहित्य विधा में अलग प्रकार से है। परसाई जी ने कबीर की ही तरह दुनिया का अवलोकन कर हर आडम्बर और कुंठा के साये में घूम फिरकर देखकर उनका वर्णन अपनी रचनाओं में व्यंग्यात्मक रूप से किया है। परसाई जी के रचनाकार की एक खास विशेषता विरूपता के प्रति उनका गैर-समझौता वादी रूख है। वे समाज, जीवन तथा मनुष्यता के उदात्त मूल्यों से विरूपता का संबंध खोज लेते है। वे विरूपता का परत दर परत उधेड़ देते है। उनका व्यंग्य सोदेश्य होता है। उनके सामाजिक कर्म बदलाव को इंगित करते है। परसाई जी अपने तथ्य को प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए अतीत को भी वर्तमान में लाकर इस प्रकार प्रस्तुत करते है कि वह प्रभावहीन नहीं रहता। कभी नारद को मात्र बनाकर विषय वस्तु पर प्रहार करते है। यही कारण है कि जहां कहीं मानव-मानव के मध्य भेद उत्पन्न करने वाली विसंगति, विषमता, पूर्ण अमानवीय एवं क्रूर स्थितियां है। वहां परसाई जैसे संवेदन शक्ति रचनाकार को तटस्थ रहकर सृजन कार्य करना संभव नहीं रह जाता।

संदर्भ ग्रंथ

1 हरिशंकर परसाई व्यक्तित्व एवं कृतित्व ज्ञिप्ता द्विवेदी, पृष्ठ 36
2 वही, पृष्ठ 39
3 वही. पृष्ठ 44
4 परसाई रचनावली, भाग - 5, पृष्ठ 220
5 शिकायत मुझे भी है हरिशंकर परसाई पृष्ठ 26
6 परसाई रचनावली भाग - 5, पृष्ठ 27
7 वही, पृष्ठ 32
8 परसाई रचनावली भाग - 6,. पृष्ठ 436
9 परसाई रचनावली भाग - 3, पृष्ठ 58
10 वही, पृष्ठ 59
11 शिकायत मुझे भी है हरिशंकर परसाई पृष्ठ 72
12 वही, पृष्ठ 72
13 परसाई रचनावली भाग - 3, पृष्ठ 181
14 वही, पृष्ठ 300
15 परसाई रचनावली भाग - 1, पृष्ठ 172
16 वही, पृष्ठ 224